DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara chakia

B.A. (Hons.), Part-III
Subject — SANSKRIT
Paper — VII
Short Notes

5 X 4 = 20 Marks
Dated- 07.07.2020

2. श्लेष अलङ्कार

शब्दालङ्कार के कतिपय भेदों में से श्लेष एक प्रमुख अलङ्कार है। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में श्लेषालङ्कार का लक्षण इस प्रकार से निर्धारित किया है — "श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।" अर्थात् श्लेषयुक्त पदों से अनेक अर्थों का कथन श्लेषालङ्कार कहलाता है। वैसे पद (भिन्नार्थक) जो परस्पर भिन्न होते हुए भी समान प्रयत्न एवं उच्चारण के कारण भेदापह्नुत होते हैं; श्लिष्ट कहलाते हैं। अतः श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों का अभिधान होने पर श्लेषालङ्कार होता है। यह अलङ्कार वर्ण, प्रत्यय, प्रकृति, पद आदि भेद से अनेक प्रकार का होता है। उदाहरणार्थ——

"प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि ॥"

यहाँ 'विधौ' - इस शब्द में विधु और विधि दोनों शब्दों के अन्तिम उकार एवं इकार (समीकृत होने के कारण) औकार रूप में आ गये हैं। अतः यहाँ वर्णश्लेष है। उपर्युक्त पद्य में ही 'कर' - इस शब्द में प्रकृति श्लेष भी है।

जिसमें प्रत्यय लगता है उसे प्रकृति कहते हैं और प्रत्यय प्रातिपदिक अथवा धातु से जुड़ता है, अतः वही प्रकृति है। इस पद्य के 'करसहस्रम्' - इस शब्द में प्रातिपदिक प्रकृतिश्लेष है। यहां पर शब्द के दो अर्थ 'किरण' और 'हाथ' का अभिधान होता है। अतएव यहाँ प्रकृति श्लेष है।

द्वितीय उदाहरण ——

'पृथुकार्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम् ॥"

राजा के प्रति किसी दरिद्र की यह उक्ति है। यहाँ 'पृथुकार्तस्वरपात्रं, भूषितनिःशेषपरिजनं, विलसत्करेणुगहनं' इत्यादि पदों में

(कृपया पृष्ठ उलटें)

श्लेष है, क्योंकि इनके द्वारा राजा और दरिद्र - दोनों के घर का बोध होता है। अतः यहां पदश्लेष है।

— 0 —

R